स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
(२५०१ - ५००० वर्ष)	(१ - २५०० वर्ष)
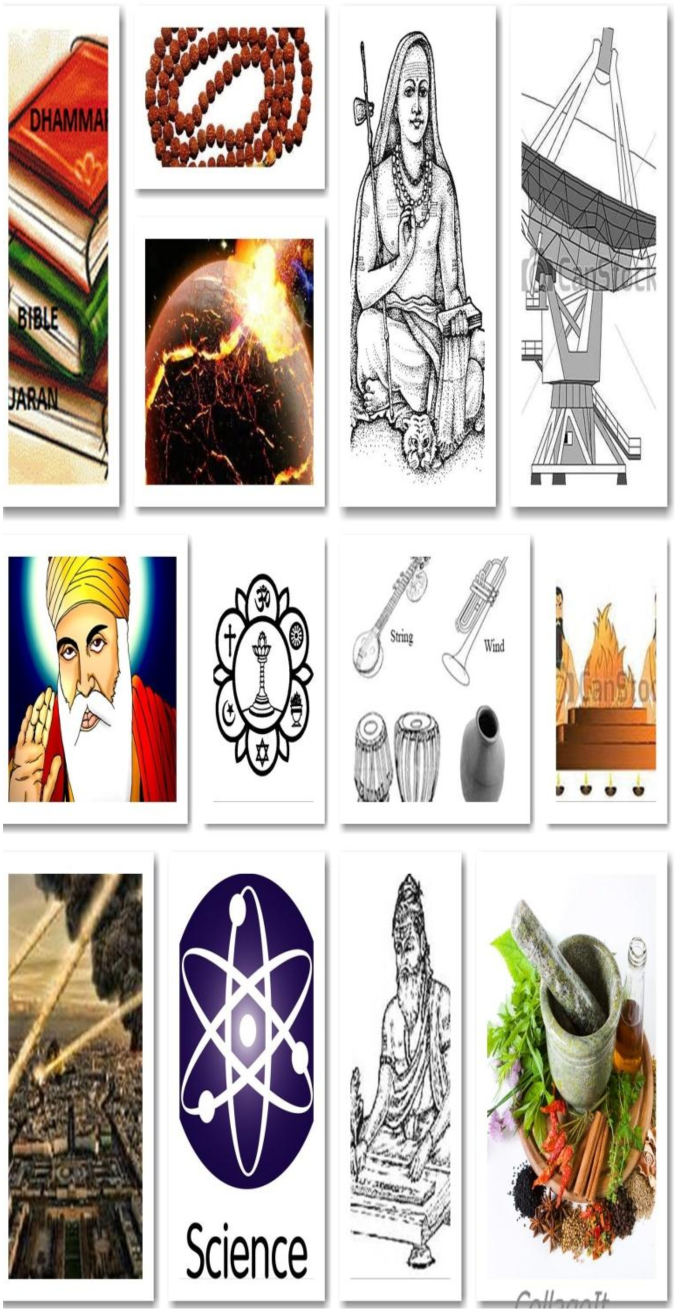 	
वर्तमान पुरानी दुनिया	भविष्य नयी दुनिया

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
• द्वापर से रावण राज्य अर्थात नर्क का द्वार खुलता है और कलियुग अंत तक चलता है जब आत्मा में गुणों की कमी होने के कारण ५ विकारों की प्रवेशता हो जाती है । रावण के आने से भक्ति शुरू हो जाती है। विकार आरम्भ हो जाते हैं ।	• सतयुग से रामराज्य अथवा स्वर्गीय दुनिया शुरू होता है और त्रेता युग के अंत तक चलता है । सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य हैं । वहाँ हर चीज सस्ती रहती है । शुरू में जनसँख्या लगभग ९ लाख होती है ।
• यहाँ पर हैं १६ कला अपूर्ण, निर्गुणी, मर्यादाहीन, हिंसक विकारी आसुरी मनुष्य । सभी धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बन जाते हैं । यहाँ धरती पर पापात्माओं का कितना बोझ है । सरसों मिसल कितने ढेर मनुष्य हैं । कुल जनसँख्या बढ़ते बढ़ते लगभग ७००-७२५ करोड़ तक पहुँच गयी है ।	• वहाँ पर हैं १६ कला संपूर्ण, सर्वगुण संपन्न, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, संपूर्ण अहिंसक देवी-देवतायें । सभी के धर्म और कर्म श्रेष्ठ थे । देवतायें थे सदा सौभाग्यशाली । वहाँ पर अद्वैत राज्य था जहाँ पर एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक मत होती है । सारे सागर, पृथ्वी, आकाश के मालिक रहते हैं ।
• यह कलियुगी दुनिया झूठी भ्रष्टाचारी, कुम्भीपाक नरक, दुःख का धाम , ब्रह्मा की रात , डेविल फारेस्ट है जहाँ भक्ति के धक्के खाते हैं । इसे द्वैत राज्य, अधर्म का राज्य, अथवा कौरव राज्य कहेंगे । यह है रावण की लंका, रावण की वंडर भूमि । सारे वर्ल्ड पर रावण का राज्य है रावण के दस सर इन्ही पाँच विकारों के प्रतीक है (५ पुरुष व ५ स्त्री के) ।	• सतयुग है ईश्वरीय गोल्डन एज याने ईश्वर का स्थापन किया हुआ वंडर भूमि । भारत तब दैवी फूलों का परिस्तान था जिसे सुख का धाम, ब्रह्मा का दिन, अद्वैत राज्य, धर्म का राज्य अथवा रामराज्य कहेंगे । सतयुग में भक्ति के धक्के नहीं, है ही सद्गति । वहाँ ऋषि मुनि होते नहीं । वहाँ रिलीजियस माइंडेड की बात ही नहीं रहती । तपस्या करने की भी दरकार नहीं । वह है ही तपस्या का फल । जहाँ भक्ति है वहाँ दुःख है । पांच विकारों की अविद्या रहती है ।
• भारत इस समय काटों का जंगल बन गया है । यह है पुरानी पापात्माओं की दुनिया जहाँ है दुर्गति । सभी मनुष्यमात्र हैं सदा दुर्भाग्यशाली । कलियुग में है महान ते महान दुःख । इन बातों को कोई समझते नहीं । रावण राज्य में सब देह-अभिमान के कारण मूढ़मति, तुच्छ-बुद्धि हो जाते हैं । पुजारी नर्क के नाथ बन जाते हैं । यहाँ पर तो जमीन, पानी, आकाश का टुकड़ा हो गया है । अपरमअपार ग्लानि हेल की करेंगे । यह है ह्यूमन वर्ल्ड । यहाँ झूठे पुरुष पापात्मा होते हैं । यहाँ पर हैं पुजारी, काले जिससे दुःखधाम के मालिक बनते हैं । रावण राज्य में कहेंगे पतित आसुरी संप्रदाय (dynasty) ।	• वह सतयुगी दुनिया सच्चा श्रेष्ठाचारी स्वर्ग, फूलों का बगीचा अथवा डीटी गार्डन है जहाँ तिल मात्र भी दुःख नहीं क्योंकि विकार नहीं, ब्रह्मा का दिन है जहाँ भक्ति के धक्के नहीं, कोई रोग शोक नहीं । देवतायें पूज्य वैकुण्ठ नाथ थे । वह थी नयी पुण्यात्माओं की दुनिया । इन बातों को कोटों में कोई भाग्यशाली ही समझेंगे। अपरमअपार महिमा है ही हेविन की । वह है डीटी वर्ल्ड । वहाँ गोरे सत्पुरुष पुण्यात्मा, धर्मात्मा होते हैं । राम राज्य में कहेंगे पावन दैवी संप्रदाय (dynasty) । वहाँ कुल आदि की बात नहीं होती । एक ही देवताओं के कुल होता है विष्णु संप्रदाय । लक्ष्मी नारायण के तख़्त के पीछे विष्णु का चित्र रहता है ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
१. मृत्युलोक में है आदि-मध्य-अंत दुःख याने अपार दुःख, १००% दुःख है । यहाँ एक भी पूर्ण सुखी नहीं होता । यहाँ पर ५% सुख है तो ९५% दुःख है विकारों के कारण ही इनको नरक कहा जाता है।	१. अमरलोक में है आदि-मध्य-अंत सुख याने अपार सुख, १००% सुख है । वहाँ एक भी दुखी नहीं होता । विकार न होने के कारण ही उनको स्वर्ग कहा जाता ।
२. मृत्युलोक को कब्रिस्तान कहा जाता है । यहाँ की राजधानी देहली है (नई और पुरानी) । पर नई देहली तो सतयुग में ही होती है जब दुनिया नई है ।	२. अमरलोक को परिस्तान कहा जाता है जिसकी राजधानी देहली ही रहती है जो सतयुग में परिस्तान थी । यही देहली तब जमुना का कंठा होगा जिस पर महल बनेंगे ।
३. कलियुग में सभी unrighteous (भ्रष्टाचारी) हैं । यहाँ है criminalization (बुरे असभ्य संस्कार) । यहाँ की है असत्य मर्यादा, लोक लाज कुल की मर्यादा । यहाँ है द्वैत राज्य (अनेक राज्य), अनेक धर्म अनेक भाषा, अनेक मत (विचार) ।	३. सतयुग-त्रेता में सभी righteous (श्रेष्ठाचारी) होते हैं वहाँ है civilization (अच्छे सभ्य संस्कार)। वहाँ की मर्यादा को सत्य मर्यादा कहा जाता है । वहाँ है एक राज्य, एक देवी-देवता धर्म, एक भाषा, एक मत ।
४. यहाँ है कर्मबंधन अथवा दुःख का बंधन जिससे दुःख की उत्पत्ति होती है । यहाँ पर साला, चाचा, मामा, आदि अनेक सम्बन्ध होते हैं ।	४. सतयुग में है सुख का सम्बन्ध जिससे सुख की प्राप्ति होती है । सम्बन्ध बहुत हल्का होता है ज्यादा नहीं ।
५. कलियुग है पत्थरों की दुनिया जहाँ मनुष्य अधर्मी पत्थरबुद्धि होते हैं । यहाँ मुख से कड़वे बोल, गालियाँ निकालते हैं, पाप करते रहते हैं, अन्दर एक बाहर दूसरे होते हैं । एक दूसरे का नुकसान पहुंचाते हैं । यह सब है रावण राज्य की गन्दी चंचलता ।	५. सतयुग है पारस दुनिया जहाँ मनुष्य धर्मात्मा पारस बुद्धि होते हैं । यह अशुद्ध अक्षर (गाली वगैरे) सतयुग में काम नहीं आते हैं । वहाँ कब कड़वा बोलते नहीं, पाप करते नहीं, चोरी आदि नहीं करेंगे, अन्दर बाहर साफ़ रहता है । एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने की वृत्ति नहीं होती । वहाँ सब कर्मेन्द्रियाँ वश में रहती है कोई चंचलता नहीं होती न मुख, न हाथ की, न कान की ।
६. कलियुग है भोगी दुनिया इसलिए यहाँ निर्बल, अल्पायु होते हैं और बहुत जन्म होते हैं । यहाँ मनुष्य की एवरेज आयु ४०-४५ वर्ष रहती है। कोई कोई की करके १०० वर्ष होती है । कोई विरला बड़ी आयु वाले होते हैं बाकी तो रोगी बन पड़ते हैं । अभी सभी मनुष्यों की है पतित कीचड़े का काया । शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए हठयोग (आसन, प्राणायाम आदि) करते रहते हैं ।	६. सतयुग है योगी दुनिया, वहाँ पवित्रता का बल रहता है इसलिए देवतायें दीर्घायु और बलवान होते हैं व जन्म कम होते हैं । वहाँ देवी-देवताओं की एवरेज आयु १५० वर्ष रहती है । सतयुग में देवताओं की कंचन काया थी । ५ तत्व की भी नेचुरल ब्यूटी रहती है । आत्मा और शरीर दोनों पवित्र एवं सुंदर रहते हैं । वहाँ सदैव तंदुरुस्त रहते हैं । सतयुग में न मनुष्य बीमार होते हैं, न जानवर । जानवरों को भी सतयुग में दुःख वा अकाले मृत्यु नहीं होती ।
७. अभी ५ तत्व भी तमोप्रधन होने के कारण शरीर भी ऐसे सावरे, कोई टेढ़ा, कोई लूला लंगड़ा आदि बनते रहते हैं । यहाँ के शरीर तो कीटाणुओं से भरे हुए रोगी हैं । इनको कहा जाता है नर्क । भल कितना भी कोई फैशन करे, पाउडर आदि लगाये फिर भी है तो नरक में ना । इस समय है डूबन का राज्य । जितना श्रृंगारते हैं उतना ही गिरते जाते हैं ।	७.सतयुग में शरीर विष से नहीं बनता । वहाँ यह दवाईयां आदि कुछ नहीं होती । शरीर चमकता रहता है । चेहरे की कोई पोलिश वगैरे नहीं करते । वहाँ तो अंग अंग में खुश्बू होती है । वहाँ तो बूढ़े के भी दांत बहुत अच्छे रहते है । टूट जाये तो disfigure हो जाये ना । वहाँ लूले, लंगड़े होते नहीं । क्रिमिनल दृष्टि होती नहीं फिर भी सभी के अंग सब ढके हुए होते हैं । लक्ष्मी-नारायण जैसा नेचुरल सुंदर तो कोई हो न सके । वहाँ सदैव तंदुरुस्त रहते हैं । देवताओं की पहरवाइस बड़ी सुन्दर होती है । फर्स्ट क्लास कपड़े होते हैं जिसे धोने की भी जरूरत नहीं पड़ती ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
८. कलियुग में सब चीजें जेड क्वालिटी की होती है । इस दुनिया की जो भी चीजें हैं सब विनाशी है । सतयुग की कोई चीज यहाँ हो न सके । स्वर्ग के आगे यह पुरानी दुनिया जैसे गोबर की दुनिया है इनसे बांस आती है । यहाँ तो शुद्ध दूध पीने के लिये भी नहीं मिलता, पाउडर मिलता है । यहाँ पर तो सच्ची चीज मिलती ही नहीं । शुद्ध दूध व घी की जगह मिलावटी माल बिकता है । हर वस्तु में मिलावट रहती है । हर चीज से essence निकाल देता हैं, गाय को खाना भी ठीक नहीं मिलता यहाँ तो मिटटी की ईटें भी मुश्किल से मिलती हैं । मुफ्त में तो यहाँ कोई भी चीज नहीं मिलती है । यहाँ सच छिपा हुआ है, झूठ ही झूठ चलता है । साइंस सुख-दुःख दोनों के लिए है । यहाँ सब है आर्टिफीसियल झूठी उन्नति ।	८. सतयुग में सब चीजें ए वन क्वालिटी की होती है । हर चीज purest form याने शुद्धतम रूप में होती है । वहाँ चीजें ही ऐसी बनेगी जो टूटने का नाम ही नहीं होगा । कलियुग की कोई चीज वहाँ हो न सके । वहाँ तो इन जेवरों आदि से सजे सजाये रहेंगे । अथाह धन होता है । सब सुखी ही सुखी रहते हैं । वहाँ तो साइंस से सुख ही सुख है । वैज्ञानिक आत्याधुनिक और सुंदर मशीनों का निर्माण करेंगे । सभी कुछ सुरक्षित एवं शुद्ध आण्विक और सौर उर्जा पर काम करेगा । वहाँ होती है सच्ची उन्नति । वह है क्षीर सागर, सोने की दुनिया । सतयुग में व्यवहार धंधा भी सच्चा चलता है । वहाँ झूठ आदि बोलने की दरकार नहीं रहती क्योंकि पैसे कमाने का लोभ नहीं होता । वहाँ तो अथाह पैसे मिलते हैं । अनाज आदि का कोई दाम नहीं रहता ।
९. अभी तो ५ तत्व (प्रकृति) भी तमोप्रधान है। यह तत्व आदि सब दुश्मन हैं । कभी बहुत गर्मी, कभी बहुत ठंडी, कभी असमय बरसात । मूसलाधार बरसात पड़ेगी तो सारी खेती आदि पानी में डूब जायेगी । नेचुरल कैलेमिटिज़ आ जाती है । यहाँ पर अच्छी फसल पैदावार होने के लिए जमीन में भी खाद डालते हैं । कोई भी चीज में ताकत नहीं हैं । हर एक चीज बिलकुल powerless अर्थात शक्तिहीन हो गई है । रिफ्रेश होने के लिए हिल स्टेशन वा विदेश के रमणीय स्थलों में घूमने जाते हैं।	९. सतयुग में ५ तत्व (प्रकृति) भी सतोप्रधान है। स्वर्ग में न गर्मी, ने ठण्डी, सदैव बहारी मौसम होगा । तत्व भी आर्डर में रहते हैं । सूर्य भी सतोप्रधान बन जाता है । कभी तपत नहीं दिखाते हैं । वहाँ ५ तत्व भी देवताओं के गुलाम बन जाते हैं । कभी बेकायदे बरसात नहीं पड़ती । कभी नदी उछल नहीं खाती । वहाँ तो गौऊओं के गोबर में भी कितनी ताकत रहती है । वहाँ ऐसे किचड़े (खाद) आदि पर खेती नहीं होती है । वहाँ तो नई मिट्टी होती है । सतयुग में फल फूल बहुत बड़े होते हैं । जितनी यहाँ ईटें पैसे से मिलती है, उतनी ईटें वहाँ मुफ्त में मिलती है । वहाँ तो दूध घी की नदियाँ बहती है । वहाँ तो गर्मी होती नहीं जो कश्मीर, शिमला आदि जाना पड़े । स्वर्ग में सदा रिफ्रेश रहते हैं । कभी उबासी आदि आयेगी नहीं वहाँ इतने जंगल, पहाड़ियाँ आदि कुछ नहीं होगी । छोटा सा स्वर्ग होगा । बहुत अच्छे अच्छे बगीचे होंगे, खुशबू आती रहेगी, बहुत अच्छी हवायें लगती रहती है यहाँ तो पानी का भी सोचते रहते, वहाँ तो झरनों में नहायेंगे । वहाँ की नदियाँ भी बड़ी साफ़ स्वच्छ होगी, कचड़ा आदि कुछ भी नहीं रहता । स्वर्ग में कोई गन्दी चीज होती नहीं, जिसमें हाथ-पाँव अथवा कपड़े आदि मैले हों अथवा जिसे देख कर घृणा आये । क्लास कपडे होंगे जिसे धोने की भी दरकार नहीं ।
१०. द्वापर से ढूँढना शुरू होता है ,जमीन खोदने पर पुरानी चीजे निकल आती है । यहाँ मनुष्य सृष्टि का अंत पाने का पुरुषार्थ करते हैं । वहाँ कोई पुरुषार्थ नहीं करते ।	१०. वहाँ पुरानी चीजें बैठ ढूँढते नहीं । पेट भरा हुआ रहता है । वहाँ तो सोने की खानियाँ भरपूर रहती हैं । जमीन खोदने की जरुरत नहीं रहती ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
११. यहाँ मृत्युलोक में तो कितनी गन्दगी है, चारों तरफ गंद करते रहते हैं, ५ तत्वों को भी प्रदूषित कर देते हैं । यहाँ तो पशु पक्षी भी गंद करते रहते हैं । जानवरों को भी पकाकर खा लेते हैं । भोजन के लिए प्राकृतिक स्त्रोत को नष्ट करते रहते हैं जिससे पर्यावरण को भारी नुकसान होता है ।	११. सतयुग है साफ़ सुथरा पावन भूमी । वहाँ कोई भी गन्दगी की चीज होती नहीं । शुद्ध शाकाहारी भोजन ही खाते हैं क्योंकि वे ही सच्चे वैष्णव है याने मन और तन दोनों से पवित्र हैं । वहाँ प्याज, लहसुन आदि तमोप्रधान चीज अथवा खट्टी, बांसी चीज होती नहीं । वहाँ भोजन के लिए लकड़ियाँ आदि नहीं जलाते । सोलर उर्जा से सभी कार्य होते हैं । वहाँ बे-टाइम कभी खाते नहीं । बड़ी रॉयल्टी से, शांति से खाते हैं ।
१२. यहाँ अनेक प्रकार की योनियाँ है जिसमें कई गंदे व हिंसक प्राणी की श्रेणीयाँ हैं । यहाँ तो कोई कोई जानवर की भी बहुत अच्छी सेवा होती है जो मनुष्य की भी नहीं होती । कुत्ते को, घोड़े को, गाय को प्यार करते हैं । कुत्तों की exhibition लगती है ।	१२. सतयुग में इतनी योनियाँ नहीं होती, थोड़ी वैरायटी होती है । वहाँ कोई खौफनाक, गंद करने वाली वा दुःख देने वाले जानवर, मक्खी, मच्छर आदि होते नहीं व साँप आदि हिंसक प्राणी नहीं होते जो किसको डसें । शेर आदि नहीं होंगे । देवी देवतायें कुत्ते नहीं पालते । वहाँ घोड़े आदि जानवर ऐसे नहीं होते जो मनुष्य उनकी सेवा करें ।
१३. द्वापर-कलियुग में भक्ति की शुरुआत होती है, दूसरे अनेक धर्मस्थापन होते हैं। अनेक मंदिर , मस्जिद , गुरुद्वारा, चर्च इत्यादि का निर्माण होता है। पुस्तकें, वेद, शास्त्र, धर्म ग्रन्थ आदि बनते हैं। अनेक धर्म ही वजह से लड़ाई, झगड़े होते हैं । परमात्मा को, देवी देवताओं को याद करते हैं क्योंकि दुःख अशांति , अप्राप्ति, चिंता बढ़ती है ।	१३. सतयुग-त्रेता में कोई धर्म स्थापन नहीं होता, वहाँ कोई पुजारी होते नहीं, न ही कोई पत्थर की मूर्ति होती । गायन, महिमा इत्यादि होती नहीं । यह केवल भक्ति मार्ग में होता है । न वहाँ कोई पुस्तक, ग्रन्थ, शास्त्र इत्यादि होते हैं और न ही मंदिर , मस्जिद , गुरुद्वारा , चर्च इत्यादि का निर्माण होता है क्योंकि वहाँ एक मात्र आदि सनातन देवी देवता धर्म ही होता है, कोई दुःख अशांति , अप्राप्ति, चिंता की बात नहीं रहती इसलिए न ही परमात्मा को जानते हैं और न ही भगवान् या गुरु को याद करेंगे । वहाँ तो सद्गति पाई हुई है । वहाँ तो सिर्फ अपनी आत्मा को याद किया जाता है, हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेगी, पति ही सब कुछ है । वहाँ न गुरु न वजीर रहता है ।
१४. रावण राज्य में तो अनेक प्रकार की विद्या पढाई जाती है, बच्चों पर पढाई का बोझ बना रहता है पढाई भी धीरे धीरे नैतिक मूल्यों व चरित्र निर्माण से हटकर भौतिक सुख प्राप्ति पर केन्द्रित हो जाता है ।	१४. सतयुग में भी बच्चे राजविद्या पढने स्कूल में जायेंगे । वहाँ बैरिस्टरी, इंजीनियरी, डॉक्टरी आदि पढ़ने की दरकार नहीं । ऑटोमेटिकली बुद्धि सतोप्रधान रहती है । स्वर्णिम युग में शिक्षा एक प्रकार का आमोद -प्रमोद होगी, बोझ रहित । देवताओं के बच्चे खेल के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करेंगे । राजनीती एवं प्रबंधन सीखेंगे किन्तु कला की शिक्षा मुख्य होगी । चित्रकला, संगीत, नृत्य व रंगमंच की कलाएं होंगी । वहाँ प्रिंस प्रिंसेस का अलग अलग कॉलेज होता है । कॉलेज जाने के लिये पैदल भी नहीं करना पड़ता । एक्सीडेंट प्रूफ विमानों में बैठकर जाते हैं । महल से निकले बटन दबाया और यह उड़ा , कोई तकलीफ नहीं । वहाँ तो जीवन निर्वाह हेतु धन कमाने के लिये पढाई नहीं पढेंगे ।अभी के पुरुषार्थ से अकीचार धन मिलता है ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
१५. कलियुगी दुनिया का सुख काग विष्टा (अल्पकाल) समान है । यहाँ है आर्टिफीसियल सुख । यहाँ पर मनुष्य प्रकृति के दास बन गए हैं । यह माया का भभका है । बहुमंजिले इमारतें बनते रहती हैं । सिक्कों के मूल्य गिरते जाते हैं । सब चीजें सारा राज्य मुलम्मे का है । रूण्य का पानी (मृगतृष्णा) समान है, इसमें मनुष्य खुश होते हैं । समझते हैं इससे सुख मिलेगा परन्तु इन सबसे दुःख ही मिलेगा । यह aero plane (हवाई जहाज) भी दु:खदायी बन पड़ेंगे । यहाँ एयरोप्लेन में सुख है तो दुःख भी । कल एक्सीडेंट हो जाय , स्टीमर डूब जाता है, ट्रेन का एक्सीडेंट हो जाता है । बैठे बैठे भी मनुष्य हार्ट फेल हो जाते हैं , bombs (बाम्ब्स) गिरायेंगे, dams फटेंगे, earthquake (भूकंप) होगी, समुद्र नीचे से धरती को खा जायेगा, बरसात ऊपर से धरती को खा जायेगी ।	१५. सतयुग में है नेचुरल सुख सदा काल का । सतयुग में देवतायें प्रकृति के मालिक होते हैं । वहाँ माया की ताकत नहीं रहती जो बेइज्जती करे, धरती की ताकत नहीं जो हिल सके । यहाँ तो पानी का भी सोचते रहते, वहां तो झरनों में नहायेंगे । वहाँ की नदियाँ भी बड़ी साफ़ स्वच्छ होगी, कचड़ा आदि कुछ भी नहीं रहता । वहाँ कोई ऐसी गन्दी, बीमारी, आदि कुछ नहीं होता । मनुष्य बड़े, साफ़ शुद्ध रहते हैं । वहाँ ऐसी मिट्टी नहीं, हवा नहीं, जो मकान खराब करें । महल में जरा भी किचड़ा नहीं । वहाँ बड़ी खबरदारी रहती है । पहरे पर रहते हैं, कभी कोई जानवर आदि अन्दर घुस न सके । बड़ी सफाई रहती है । वहाँ घी आदि खरीदना नहीं पड़ेगा । सबके पास अच्छी गायें फर्स्ट क्लास होंगी । गायें बहुत सतोप्रधान सुंदर होती हैं । वहाँ तांबा, पीतल, लोहा आदि होता नहीं है । सोने के सिक्के ही चलन में आते हैं । वहाँ मकान बहुत बड़े होते हैं । सारे आबू जितनी जमीन एक एक राजा की होगी । वहाँ फर्नीचर भी सोने जड़ित फर्स्ट क्लास होगा । वहाँ मीठे पानी पर महल होंगे । कहाँ पहाड़ियों पर जाने की दरकार नहीं । वहाँ पर इतनी मंजिले होती नहीं, डबल स्टोरी भी नहीं होती । यहाँ ही बनाते हैं ८-१० मंजिले क्योंकि जमीन नहीं है । मकानों में भी सोना, चाँदी , हीरा लगता है । रोशनी ऐसी रहती है जो बत्ती दिखाई नहीं पड़ेगी, सिर्फ रोशनी दिखाई पड़ेगी । सोने के महल आदि बनाने में वहाँ कोई देरी नहीं लगती । मशीनरी पर झट गलाकर टाइल्स बनाते हैं । झट सोने के, मार्बल के मकान बनते जायेंगे । इंजिनियर आदि सब होशियार होते हैं । सतयुग में विमान, बिजलियों की जरुरत पड़ेगी । स्टीमर आदि होते नहीं । वहाँ यह रेल आदि भी नहीं होगी, जरुरत ही नहीं, छोटा शहर होगा । विमान भी वहाँ फुल प्रूफ होते हैं । कभी टूट न सके । कभी मशीन आदि ख़राब न हो सके । एक्सीडेंट होना ही नहीं है , कोई भी किस्म का । स्वर्णिम युग का विज्ञान बहुत विकसित होगा ।
१६. भल एयरोप्लेन में घूमते हैं । बड़े बड़े मकान है । परन्तु यह तो सब ख़त्म होने वाला है । यह है रूण्य का पानी (मृगतृष्णा) मिसल राज्य । बाहर से देखने में भभका बहुत है अन्दर पोलमपोल है । भल कितना बड़ा साहूकार है, बीमार हुआ, अंधा हुआ, एक्सीडेंट हुआ तो दुःख होता है ना । बड़े बड़े ऑफिसर्स को भी मार देते हैं । कोई को डर नहीं । सुख के बजाय और दुःख है । चोर भी लूटते रहते हैं । कैसे कैसे मार पीटकर पैसे लूट ले जाते हैं । ऐसी ऐसी दवाइयाँ हैं जो सुंघाकर बेहोश कर देते हैं । कोई का राजा तो कोई का डाकू खा जाते हैं ।	१६. स्वर्ग में कर्मभोग की बात होती नहीं, कोई बीमारी, एक्सीडेंट, मारामारी, लूटपाट आदि की बात नहीं क्योंकि सभी पुण्य आत्मायें होते है, वहाँ पर विकार ही नहीं होते, किसी भी चीज की कमी नहीं होती जो चोरी, लूटमार आदि करें ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
१७. यहाँ है अल्पकाल का क्षणभंगुर राज्य । कोई राज्य नहीं है । राज्य तो उनको कहा जाये जहाँ कोई किंग- क्वीन हो । यह तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है । इसलिए अनराइटियस राज्य है । एक गवर्नमेंट नहीं ।	१७. वहाँ एक ही राजा रानी का राज्य था । प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं । इसलिए राइटियस राज्य था । उस समय अमेरिका, यूरोप आदि कुछ नहीं होता । बॉम्बे भी नहीं होती । वहाँ सतयुग में सूर्यवंशी लक्ष्मी नारायण दी फर्स्ट, सेकंड, थर्ड ऐसे ८ गद्दी चलती है फिर क्षत्रिय धर्म याने त्रेता युग में भी फर्स्ट, सेकंड, थर्ड ऐसे १२ गद्दी चलती है । सतयुग में यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी की इन लक्ष्मी-नारायण जैसी ड्रेस रहती है । पीताम्बर - यह है सतयुगी सूर्यवंशी की ड्रेस । त्रेता में रामराज्य में फिर दूसरी ड्रेस होती है । लक्ष्मी नारायण के महलों में हीरें जवाहरात होते हैं । बड़ी दरबार लगती है । राजे-रजवाड़े आपस में मिलते हैं जिसे लक्ष्मी नारायण के राजधानी की सभा कहेंगे । खिडकियों पर सोने, हीरे, जवाहरों का बड़ा अच्छा श्रृंगार होता है
१८. यहाँ सभी भल धनवान है फिर भी रोगी बीमार हैं । यहाँ के साहूकारों में भल कितने भी बड़े बड़े राजायें थे, धन बहुत था परन्तु हैं तो विकारी ना । यहाँ हेल्थ है तो वेल्थ नहीं वेल्थ है तो हेल्थ नहीं इसलिय हैप्पीनेस (सुख) नहीं । साहूकार और प्रजा दोनों दुःख भोगते हैं । यहाँ पर कौड़ियाँ हैं । रावण राज्य में कितना घाटा पड़ता है ।	१८. स्वर्ग में हेल्थ और वेल्थ दोनों हैं इसलिये हैप्पीनेस (सुख) है । वहाँ भल गरीब हो फिर भी पैसे की चिंता नहीं । प्रजा और साहूकार दोनों सुखी रहते हैं यहाँ के धनवानों से वहाँ की साधारण प्रजा भी बहुत ऊंच बनती है । वहाँ घाटे की कोई बात नहीं ।
१९. यहाँ मनोरंजन के लिए विकारी साधनों का इस्तेमाल करते रहते हैं ।	१९. सतयुग में बाइस्कोप आदि होते नहीं । मनोरंजन के लिए नाटकशालायें होते हैं । देवतायें ख़ुशी में खेलपाल याने रास करते हैं ।
२०. यहाँ कुछ न कुछ कमी जरूर रहती है, ईश्वर से पुत्र धन संपत्ति इत्यादि मांगते रहते हैं । यहाँ फजूल खर्चा बहुत है । यहाँ चीज दिन पर दिन महँगी होती जाती है ।	२०. सतयुग में कोई चीज की कमी नहीं रहती, वहाँ पर हर चीज की भरपूरता है । कुछ माँगने की जरुरत नहीं रहती । वहाँ फजूल (व्यर्थ) खर्चा नहीं करेंगे । वहाँ हर चीज सस्ती रहती है ।
२१. रावणराज्य में गम भी है तो ख़ुशी भी है। अभी अभी ख़ुशी, अभी अभी गम । यह गम की दुनिया है । विश्व स्वीट कहाँ है । बरोबर अभी रात है । रात दुःख की होती है । यहाँ हर एक बात quick होती है । मौत भी quick होती रहती है । आज किसको बच्चा हुआ तो ख़ुशी होगी कल मर गया तो दुःख । यहाँ महिलायें भी पढ़ती हैं नौकरी करने के लिये क्योंकि पति मर गया तो संभाल कौन करें ? अब यह है orphan (अनाथ) की दुनिया । सारी दुनिया का कोई धनी धोणी नहीं है। मनुष्य मनुष्य से लड़ते हैं। । भल पैसे वाले हैं , वह भी अल्पकाल के लिए । यहाँ सब दुर्गति में हैं । ज्ञान देने वाला कोई नहीं है । सभी मनुष्य मात्र नास्तिक निधन के हैं । बाप को जानते नहीं, रडियां मरते रहते हैं ।	२१. रामराज्य में खुशियाँ ही खुशियाँ हैं, गम की कोई बात नहीं । वहाँ अकाल मृत्यु होती नहीं । माताओं को जीविका के लिए नौकरी की चिंता नहीं करनी पड़ती । वह है स्वीट दुनिया । वहाँ अकाले मृत्यु होती नहीं । मरने की बात नहीं । बाकी चोला तो बदलेंगे न । जैसे सर्प एक खाल उतार दूसरी लेते हैं वहाँ है सदैव सनाथ । सभी सद्गति में याने सदा सुख, शान्ति, संपत्ति से भरपूर होते हैं

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
२२. यहाँ कलियुग में महान (घोर) दुःख है । दुःख के पहाड़ गिरते रहते हैं। इसलिए रोते रहते हैं । इस समय सारी दुनिया जीती जागती नरक है जहाँ मनुष्य दुःखी रोगी हैं ।	२२. सतयुग में दुःख का नामोनिशान नहीं । वहाँ है घोर सुख । वह है हँसने वाली दुनिया । वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे की राजी ख़ुशी हो ? तबीयत ठीक है ? यह अक्षर वहाँ होती नहीं क्योंकि सुख की दुनिया है । वहाँ रोने की बात ही नहीं होती । शरीर छोड़ने समय भी बाजे बजते हैं, जन्म लेने समय भी बजते हैं । वहाँ कभी नहीं कहेंगे कि यह ख़राब है, यह ऐसा है । वहाँ बुरे लक्षण कोई होते नहीं । हाँ, साहूकार और गरीब हो सकते हैं । बाकी अच्छे वा बुरे गुणों की भेंट वहाँ होती नहीं, सभी सुखी रहते हैं दुःख की बात नहीं, नाम ही है सुखधाम ।
२३. कलियुग है अकल्याणकारी नर्क । यहाँ अनेक प्रकार के घुटके खाते हैं। मनसा - वाचा - कर्मणा में हिंसा जरुर आता है, एक दूसरे से नफरत है, लड़ते झगड़ते हैं। यहाँ तो प्यार का नाम नहीं, मार है । लड़ना झगड़ना तो आरफन्स (अनाथों) का काम है । यहाँ पर सब मनुष्य हैं लूनपानी । अभी तो है पंचायती राजस्थान (प्रजास्थान) । यह है ही आसुरी दुनिया, बहुत corruption (भ्रष्टाचार) लगी हुई है। मनुष्य रावण मत पर चल कितने जूठे हो गए हैं इसलिय यह झूठखंड बन गया है । झूठी माया झूठी काया ... यहाँ घोर अँधियारा है। इसको अंधेर नगरी कहा जाता है ।	२३. सतयुग है कल्याणकारी स्वर्ग । वहाँ घुटके खाने की कोई बात नहीं । मनसा में भी हिंसा के विचार नहीं आते । सतयुग में देवताओं की चलन ऊँची और रॉयल है । एक दूसरे से पारिवारिक स्नेह संबंध रहता है , कभी आपस में लड़ते झगड़ते नहीं । सतयुग में आज्ञा न मानने की बात ही नहीं । वहाँ तो सब प्यार से चलते हैं । वहाँ राजा-रानी का भी बहुत प्यार होता है , बच्चों का भी, प्यार भी बेहद का । जानवरों का भी आपस में लव रहता है । सभी क्षीरखंड होकर रहते हैं । वहाँ है सदैव सनाथ । वह है सच्चा राजस्थान , श्रेष्ठाचारी दुनिया, सचखंड ।
२४. यहाँ धन के पिछाड़ी चोरी करने लग पड़ते हैं । दो पैसा दो तो बड़े मिनिस्टर को भी मार डालते हैं । यहाँ कोई पर भी भरोसा नहीं कर सकते हैं यहाँ मनुष्यों का धंदा है एक दो को लड़ाना सब एक दो के दुश्मन बन जाते हैं बच्चा बाप का और बाप बच्चे का दुश्मन बन पड़ते हैं । यहाँ रोना पीटना लड़ाई झगड़ा लगा रहता है । कल मिलिट्री बिगड़ती है तो बादशाह को भी कैदी बना देते हैं कोई को भी मार डालते हैं । यहाँ कोई भी सेफ्टी नहीं है । कहीं न कहीं माया के चम्बे में फँस पड़ते है ।	२४. देवी-देवताओं के राज्य में किले आदि नहीं होते क्योंकि वहाँ कोई सेफ्टी की चिंता नहीं रहती । कोई शत्रु नहीं होता जो चढाई करे ।
२५. सारी सृष्टि ही पतित हो गयी है, इसे पतित दुनिया ही कहेंगे। पतित दुनिया में एक भी पावन हो नहीं सकता । अब हो गया है अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग, विकारी प्रवृत्ति मार्ग कहा जाता है । पवित्र गृहस्थ आश्रम नहीं रहा । घर घर में झगड़ा लगा पड़ा है विकारों के कारण । इस दुनिया में न प्यार है न सार है ।	२५. स्वर्ग है पावन दुनिया जहाँ एक भी पतित नहीं होते वहाँ लॉ नहीं है किसको अपवित्र बनाना । सभी चीजें वहाँ पवित्र होती है । वहाँ था पवित्र प्रवृत्ति मार्ग पवित्र गृहस्थ आश्रम क्योंकि विकारी दुःख के सम्बन्ध नहीं होते बल्कि स्नेहयुक्त सुख के सम्बन्ध थे ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)	
नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	**स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)**
२६. यहाँ भूख हड़ताल, पिकेटिंग, स्ट्राइक आदि होती रहती है, कितनी मारामारी होती रहती है । एक दुसरे को तंग करते रहते हैं, हत्या कर देते हैं । यहाँ मेहतर, मजदूर, ड्राइवर आदि स्ट्राइक कर देते हैं तो धंदा ठहर जाता है । कहाँ अनाज, सब्जी नहीं मिलेगी, दूध नहीं मिलेगा ।	२६. स्वर्ग में स्ट्राइक आदि की बात नहीं । वहाँ तो अनाज, इतना हो जाता है जो बिगर पैसे जितना चाहे उतना मिलता रहेगा । सब्जी दूध की भी भरपूरता रहती है । वह है ही क्षीर सागर ।
२७. घुट घुट कर मरना रावण राज्य में होता है । मरना शब्द दुःख का है । इस समय सारी दुनिया जीती जागती नरक है जहाँ मनुष्य दुःखी रोगी हैं । यहाँ अनेक मुसीबतें सिर पर है । देवाला, बीमारियाँ आदि बहुत है । अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो जाती है । अनेक प्रकार की दवाइयाँ निकलती रहती हैं । अकाले मृत्यु होती रहती है । कोई विरला बड़ी आयु वाले होते हैं बाकी तो रोगी बन पड़ते हैं । यहाँ तो मनुष्य के शरीर छोड़ने पर उनकी मिट्टी लेकर रस्म रिवाज करेंगे, ब्राहमणों को खिलायेंगे, श्राद्ध इत्यादि करते रहेंगे ।	२७. सतयुग में ऐसे नहीं कहते कि फलाना मर गया । वहाँ तो ख़ुशी ख़ुशी से शरीर छोड़ते हैं । पुराना शरीर छोड़ दूसरा किशोर अवस्था का शरीर लेते हैं । आत्मा चली गयी, खाल तो कोई काम की नहीं रही, शरीर चंडाल के हाथ दे दिया, वह रस्म रिवाज अनुसार जला देंगे । वहाँ रस्म इत्यादि में पैसे नहीं लगायेंगे । वहाँ शरीर का कोई मूल्य नहीं रहता । बिजली पर रखा और खलास । ऐसे नहीं शरीर को कहाँ उठाकर ले जायेंगे । हड्डियाँ कोई नदी में नहीं डालेंगे, न रोयेंगे, न ब्राहमण को खिलायेंगे ।
२८. गांधीजी भारत में रामराज्य लाना चाहते थे इस खातिर भारत को फोरेनेर्स से छुड़ाया परन्तु कोई सुख तो नहीं हुआ और ही दुःख हो गया । देश अंग्रजों से तो मुक्त हुआ पर विकारों के चंगुल से स्वतंत्र हो न सका बल्कि और ही उसके दलदल में धंसता गया । यहाँ की दुनिया में बहुत खिटखिट हैं, गोरख धंधे हैं । उपद्रव आदि होते रहते हैं । बहुत घमसान होती रहती है । देश व राज्य के अलग अलग टुकड़े कर देते हैं । अभी तो कितनी partition है । अपने अपने प्रान्त की संभाल करते रहते हैं । यहाँ अनेक प्रकार के भिन्न भिन्न धर्म जातियाँ हैं। धर्म जाति के नाम पर लड़ते झगड़ते हैं । यहाँ सभी मनुष्यों की उतरती कला होती है । मनुष्यों की विचार शक्ति कुछ भी नहीं । बुद्धि को बिलकुल ताला लगा हुआ है ।	२८. सतयुग में पार्टीशन आदि कुछ नहीं होगी । वहाँ आकाश, धरती सारी तुम्हारी होगी । वहाँ सारी दुनिया में एक धर्म होगा । ऐसे नहीं चीन, यूरोप नहीं होंगे, होंगे परन्तु देवता धर्म वाले होंगे, और धर्म वाले नहीं होंगे । वहाँ कायदे से राज्य चलता है । प्रकृति आर्डर में चलती है । वहाँ कोई उपद्रव हो नहीं सकता ।

<table>
<tr><th colspan="2">स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)</th></tr>
<tr><th>नरक (द्वापरयुग - कलियुग)</th><th>स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)</th></tr>
<tr><td>२९. कोई तो तीर्थयात्रा पर भी ऐसे शौक़ीन जाते है जो शराब आदि भी अपने साथ वहाँ ले जाते हैं । बड़े आदमी इसके बिगर रह नहीं सकते हैं । अभी वह तीर्थ क्या काम के रहेंगे । तीर्थों पर भी वेश्यायें रहती हैं ।
३०. यहाँ कैसे कैसे बीमारी है, हॉस्पिटल में बीमारी में कितनी दुर्गन्ध हो जाती है । नफरत आती है । कर्मभोग कितना है । इन सब दुखों से छुटने के लिये शिव बाप कहते हैं - सिर्फ मुझे याद करो और कोई तकलीफ तुमको नहीं देता हूँ ।
३१. पुरानी दुनिया में है दुःख । बरसात में कितने मकान गिरते रहते हैं, कितने डूब जाते हैं । धरती भी जोर से हिलती है । तूफ़ान, बरसात आदि सब होता है । बोम्ब्स भी फेकते रहते हैं ।
३२. यह सारी दुनिया बड़े ते बड़ी हास्पिटल है , जिसमें सब मनुष्य पतित रोगी है । यह रोगियों की बड़ी हॉस्पिटल हैं । रोगी जरूर जल्द मर जायेंगे । आयु भी बहुत कम होती है । अचानक मृत्यु को पा लेते हैं । बाप आकर निरोगी बनाते हैं
३३. भल कितने भी करोड़पति, पदमपति हो परन्तु पतित दुनिया तो जरुर कहेंगे ना । यह कंगाल दुखी दुनिया है, विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं । यह भी नहीं समझते कि विकार में जाना पाप है । कहते हैं इसके बिगर सृष्टि वृद्धि को कैसे पायेगी ।
३४. दुनिया में मनुष्य कितना लड़ते-झगड़ते हैं । जीवन ही जैसे जहर मिसल कर देते हैं । आगे चल जीवन और भी जहर होती जायेगी । यह है ही विषय सागर । रौरव नरक में सब पड़े है । इसको कहा जाता है dirty world । एक दो को दुःख ही देते रहते हैं क्योंकि देह अभिमान का भूत है । यह भूत ही काला मुंह करते हैं । काम चिता पर बैठ काले बन जाते हैं तब बाप कहते हैं फिर हम आकर ज्ञान की वर्षा करते हैं ।</td><td>२९. सतयुग-त्रेता में कोई तीर्थस्थान पर नहीं जाते क्यों कि वहाँ ये होते ही नहीं । भारत के अलावा और देश सिर्फ पिकनिक स्थान होते हैं । वहाँ सभी की निरोगी आयु , सदा युवा रहते हैं, न अकाल मृत्यु, न एक्सीडेंट, न मंदिर न शास्त्र होंगे, न अस्पताल न कोर्ट कचहरी न जेल होंगे । वहाँ पर सभी पावन आत्माएं होते हैं व ५ तत्व सतोप्रधान होने से कोई प्राकृतिक आपदाएं नहीं आती, कोई मारामारी, लड़ाई झगड़े नहीं होते, न कोई किसी को तंग करता है महाराजा - महारानी ही केस सँभालते हैं । केस होंगे भी न के बराबर । वह है ही pure world – garden of flowers (फूलों का बगीचा) । वहाँ विकार की अविद्या रहती है क्योंकि है ही निर्विकारी दुनिया । आत्मअभिमानी स्थिति में रहते हैं ।</td></tr>
</table>

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
३५. इस समय सारी दुनिया बेहद की लंका है । चारों ओर पानी है ना जिसमे रावण का राज्य है । इस समय शोक ही शोक है । अशोक एक भी नहीं रहता । सारी दुनिया इस समय बेहद की शोक की होटल है । खान पान मनुष्यों की जानवरों मिसल है । क्या क्या चीजें खाते रहते हैं । जानवरों की, मनुष्यों की बलि चढ़ती है । ३६. यह दुनिया भी पतित है, मनुष्य भी पतित है, ५ तत्व भी पतित है । देवी दवताओं का आव्हान करते हैं परन्तु वे यहाँ थोड़े ही आ सकते हैं । ३७. यहाँ कितना मतभेद है । पानी पर, जमीन पर झगड़ा । पानी बंद कर देते हैं, तो पत्थर मारने लग पड़ते हैं । एक दो को अनाज नहीं देते तो झगड़ा हो जाता है । ३८. यहाँ है अशांति का राज्य क्योंकि रावण राज्य है । असुरों को कभी शांति होती नहीं । घर में, दुकानों में जहाँ तहां अशांति ही अशांति होगी । ५ विकार रूपी रावण अशांति फैलाते हैं । भल साधु संत हैं, ऐसा नहीं कि उन्हें कोई दुःख नहीं होता है । कोई पागल बन पड़ते हैं । बीमार रोगी भी होते हैं । यहाँ साधु-संत आदि सब दुखी हैं । सब शांति चाहते हैं । बीमारी तो उनको भी होती है । एक्सीडेंट होती है । दुनिया में दुःख के सिवाय और कुछ तो है नहीं । ३९. मनुष्यों को इस समय फिकरात ही फिकरात है - बच्चा बीमार हुआ, बच्चा मरा, किसी को बच्चा न हुआ तो फिकरात, कोई ने अनाज जास्ती रखा, पुलिस व इनकम टैक्स वाले आये तो फिकरात । यह है ही डर्टी दुनिया, दुःख देने वाली । एयरोप्लेन, ट्रेन गिर पड़ती है । मौत कितना सहज खड़ा है । धरती हिलती है तो अर्थक्वेक हो जाता है इसको कब्रिस्तान कहा जाता है जहाँ अकाले मृत्यु होती रहती है । रावण को हर वर्ष जलाते रहते हैं परन्तु वह मरता ही नहीं । ४०. यहाँ तो घर घर में दुःख है, कोई ख़ुशी वा उमंग उत्साह नहीं, इसलिये तरह तरह के त्योहार अथवा उत्सव मनाते रहते हैं । ४१. अब लड़ाई, मारामारी क्या क्या हो रहा है, इसको कहा जाता है खूने नाहेक खेल । बिना कोई कसूर के मौत देते रहते हैं । एक ही बम ऐसा गिरायेंगे जिससे सब खलास हो जायें ।	३०. सतयुग है सच्चा रामराज्य जहाँ धरती पर स्वर्ग होता है । देवी देवतायें प्रैक्टिकल में राज्य करते हैं । आत्मा व ५ तत्व दोनों पावन होते हैं । वहाँ पर health, wealth, happiness , purity, peace prosperity सभी रहती है , सभी के एक मत रहते हैं इसलिए कोई मतभेद नहीं, किसी बात का शोक नहीं, किसी चीज की कमी नहीं रहती, ५ विकार रूपी रावण न होने से सर्वत्र शांति का ही साम्राज्य रहता है । साधु, सन्यासी अथवा मंत्री के सुझाव की वहाँ कोई जरुरत नहीं होती । किसी बत की फिकरात नहीं होती । ३१. वहाँ दीपमाला होती है कोरोनेशन पर । बाकी कलियुगी दुनिया के रस्म रिवाज, त्योहार सतयुग में नहीं होते । वहाँ तो सुख ही सुख होने से सदैव उत्सव ही है ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)	
नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	**स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)**
४२. अभी धर्म नहीं तो धर्म में ताकत नहीं रही इसलिए भारतवासी unrighteous, unlawful, insolvent बन पड़े हैं । No purity, No peace, No prosperity. ४३. यह काली दुनिया है । काले अर्थात सावरें (पतित) । गुण तो जो गोरे (पावन) हैं उनमें ही होंगे । ४४. यहाँ एक तो रावण का जेल फिर रावण की मत पर चलने वाले का जेल । भक्ति की भी जंजीरें, गुरुओं की जंजीरें फिर पति की भी जंजीरें । रावण की मत पर दुखी होते हैं तो पुकारते हैं । इस दुनिया को बहुत कड़ा नाम दिया गया है कुम्भीपाक नर्क जिसमें विषय वैतरणी नदी बहती है । सारी दुनिया ही विषय वैतरणी नदी है । सब इस समय दुःख पा रहे हैं । सब एक दो को दुःख ही देते हैं । समझते सुख हैं, परन्तु वह है दुःख । परमात्मा बाप से सबको बेमुख करते हैं । रावण राज्य में अल्पकाल का सुख रहता है बाकि दुःख ही दुःख है जिसको सन्यासी लोग कागविष्टा समान सुख कहते हैं । क्योंकि विकार से पैदा होते हैं । विकार में जाना दुःख है तब तो सन्यासी भी सन्यास करते हैं । समझते हैं स्त्री नागिन है ,घर में रहना गोया नर्क में रहना, गोता खाना है । ४५. यह आसुरी दुनिया कितनी कड़वी है, स्वीट नहीं । कड़वी चीज दुःख देने वाली होती है । मात-पिता, भाई-बहन सब कड़वे क्योंकि देह अभिमानी और पतित हैं । ४६. यहाँ समझते हैं स्टूडेंट का नया ब्लड है, यह बहुत मदद करेंगे । इसलिए गवर्नमेंट भी मेहनत करती है उन्हों पर और फिर पत्थर आदि भी वहीं मारते हैं । हंगामा मचाने में पहले पहले स्टूडेंट ही आगे रहते हैं । ४७. अभी कितना दुःख है । आगे इतना दुःख नहीं था जब से बाहर वाले आये हैं तब से यह राजायें लोग भी आपस में लड़े हैं । जुदा जुदा हुए हैं । यहाँ पर पुरुष स्त्री में, जाती धर्म में भेद बहुत होता रहता है जिसके कारण लड़ते झगड़ते हैं, एक दो की हत्या करते हैं । मनुष्य की चलन गन्दी है । है ही पापात्माओं की दुनिया, तो सदाचारी कहाँ से आये मनुष्य को जो पैसा दो तो उससे पाप ही करते हैं फिर दान पुण्य भी करते हैं उससे सदाचारी तो नहीं हो जाते ।	३२. सतयुग में एक देवी-देवता धर्म में बड़ी ताकत रहती है । तब भारत righteous, lawful, solvent था । purity, peace, prosperity थी । वहाँ न मंदिर न शास्त्र होंगे, न अस्पताल न कोर्ट कचहरी न जेल होंगे । वहाँ विकारी न होने से सुख के मीठे सम्बन्ध रहते हैं वहाँ के बच्चे भी सतोप्रधान, शुरुद बुद्धि वाले होते हैं । कोई किसी को दुःख नहीं देते , न कोई खिटपिट, झगड़े आदि होते हैं । सभी सदाचारी, श्रेष्ठाचारी पुण्य देवात्मा होते हैं ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
४८. यहाँ छोटे बड़े सब दुःख देते हैं । गर्भ में माता को बच्चे दुःख देते हैं । नर्क में गर्भ जेल में फथकते हैं । यहाँ गर्भ जेल में रहते हैं तब कहते हैं हमको बाहर निकालो फिर हम पाप नहीं करेंगे फिर भी पाप करने लग पड़ते हैं । आजकल तो १०-१२ बच्चें पैदा करते रहते हैं । कोई कायदा ही नहीं रहा । यहां तो ५-७ बच्चे पेट चीरकर भी निकालते हैं । कितने तकलीफ से बच्चे पैदा होता है । बाप विकार में जाकर बच्चे पैदा करते हैं । यहाँ गर्भ जेल में सजाएं खाते हैं । बाप बच्चों की संभाल कर फिर उन्हें नर्क में ढकेल देते हैं । जब वे विषय वैतरणी नदी में गोते खाने लगते हैं तो इसमें बाप खुश होते हैं । और यदि बच्चों को पैदा कर खुद मर जाते हैं तो शरीर निर्वाह अर्थ सर्विस करनी पड़े । बच्चा पैदा न हो तो दुसरे का लेना पड़े । यह है ही दुःखधाम ।	३३. वहाँ १५० वर्ष की आयु होती है तो बच्चा आता तब है जब आधा लाइफ से थोडा आगे होंगे । वहां कायदे अनुसार एक बच्चा व एक बच्ची होती है उससे ज्यादा नहीं । पहले मेल बच्चा फिर ८-१० वर्ष पश्चात फीमेल चाइल्ड आती है । वहाँ बच्चे का भी इंतजार नहीं होता है । समय अनुसार आपे ही साक्षात्कार होता है । सतयुग में लॉ बना हुआ है । जब बच्चा होने के समय होता है तो पहले से ही दोनों को साक्षात्कार हो जाता है कि अब बच्चा होने वाला है । उसको कहा जाता है योगबल, पूरे टाइम पर बच्चा पैदा हो जाता है । सतयुग-त्रेता में कभी कोई रोते नहीं, छोटे बच्चे भी नहीं रोते । रोने का हुक्म नहीं । वह है ही हर्षित रहने की दुनिया । सतयुग में न सजाओं वाला जेल न ही गर्भ जेल होता है । वहाँ पाप ही नहीं होता क्योंकि वहाँ विकार ही नहीं इसलिए वहाँ गर्भ महल कहा जाता है । बच्चा मौज में बड़े आराम से गर्भ महल में रहता है बिना किसी तकलीफ के । वहाँ तो गर्भ महल से बच्चा निकलता है, गर्भ से निकला और दासियाँ उठा लेती है । बाजे बजने लग पड़ते है । वहाँ बच्चे automatic अच्छी रीति पलते हैं । दास दासियाँ तो आगे रहते ही है ।
४९. यहाँ गरीब बेचारे गंद में, झोपड़ों में पड़े हैं जिनको फिर तोड़ने में भी देरी नहीं करते हैं । जगह पुरानी होती है तो म्युनिसिपेलिटी वाले पहले से ही खाली करा देते हैं । उनको दूसरी जगह दे वह जगह बचते रहते हैं । गरीब दुखी बहुत हैं, जो सुखी हैं वो भी स्थायी सुख नहीं । गवर्नमेंट हर चीज पर इनकम टैक्स लगाती रहती है ।	३४. वहाँ तो अथाह धन होता है । जमीन भी ढेर होती है । जमीन का भाव लगता ही नहीं, न municipality का टैक्स आदि लगता है । जितनी जमीन चाहिए ले सकते हैं । सबको अपने अपने खेती होती है । नदियाँ तो सब होंगी, बाकी नाले नहीं होंगे ।
५०. आज की दुनिया में एक दो को लंगड़ा मान देते हैं, स्थाई किसको मिलता नहीं । इस पतित दुनिया में पतितों का ही मान है ।	३५. मेल व फीमेल का status समान रहता है । शक्ल भी लगभग समान ही रहता है । सिर्फ फीमेल के केश और चेहरे में थोडा फर्क रहता है । वहाँ सभी को समान मान सम्मान रहता है । राजा व प्रजा एक परिवार की तरह होते हैं ।
५१. यहाँ तो जितने मनुष्य उसी अनुसार चित्र निकलते रहते हैं । स्टैम्प भी अनेक प्रकार की बनती है ।	३६. सतयुग में शिव वा लक्ष्मी नारायण आदि का कोई चित्र नहीं होता । क्योंकि वहाँ किसी का गायन-पूजन नहीं होता । लक्ष्मी नारायण की स्टैम्प निकलती है ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)

५२. रावण राज्य में रंग रूप की माया आकर चटकी । यहाँ तो है अनर्थ । सब से बड़ा अनर्थ है एक दो पर काम कटारी चलाना जिससे आदि मध्य अंत दुःख पाते हैं । सबसे छी छी हिंसा यह है इसलिए इनको नर्क कहा जाता है । रावण राज्य में विकार के बिगर तो कोई का भी शरीर पैदा नहीं होता जिसके लिए अपने बच्चों को ढकेलते हैं । बच्चा शादी नहीं करता तो कितना बिगड़ते हैं, कितना अत्याचार करते हैं । यहाँ कुमार-कुमारियाँ आदि सब गंद करते रहते हैं । १२-१३ वर्ष की कुमारियाँ भी बच्चा पैदा करेंगी ।

अगर स्त्री विकार नहीं देती तो कितना तंग करते हैं । माथा मारते हैं । यह सारी दुनिया बड़ा भारी विष का सागर है जिसमें मनुष्य गोते खाते रहते हैं इसको ही पतित भ्रष्टाचारी दुनिया कहा जाता है ।

५३. आजकल दुनिया में फैशन की भी बहुत बड़ी मुसीबत है । क्या क्या फैशन निकला है । अपने पर आशिक करने के लिए शरीर को कितना टिपटॉप करते हैं, आर्टिफीसियल श्रृंगार करते हैं , कैसी कैसी ड्रेस पहनते हैं । आगे मातायें बहुत परदे में रहती थी कि कोई की नजर नहीं पड़े । अभी तो और ही खुला कर दिया है तो जहाँ तहाँ गंद बढ़ गया है । किसी को देखने से दिल लग जाती है फिर और धर्म वालों से भी शादी कर लेते हैं । इस समय ख़ूबसूरती में भी मुसीबत है कन्याओं को भगाते रहते हैं, कुकर्म करते हैं । आजकल वानप्रस्थ अवस्था में भी विकार बिगर रह नहीं सकते बिलकुल ही तमोप्रधान हो गये हैं

५४. यहाँ तो अथाह दुःख है, लड़ाई, मौत विधवापन, जीवघात करना.... । गृहस्थी में कितना झंझट होते हैं फिर कितना दुखी होते हैं । घर घर में अशांति है, मार पीट है ।यह पतित दुनिया एक पुराना गाँव है, यह रहने लायक नहीं । दुःखधाम में कोई विश्राम थोड़े ही होता है । मनुष्यों को भक्ति कितना थकाती है । कंगाल कर देती है जन्मजन्मान्तर ।

स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)

३७. सतयुग में दोनों प्रकार की हिंसा नहीं होती, न काम कटारी वाली न स्थूल हिंसा । सभी आत्म अभिमानी रहते है विकारों के द्वारा कोई पाप कर्म नहीं होते । वहाँ मुख का प्यार होता है । विकार की बात ही नहीं है । वह है ही निर्विकारी दुनिया वहाँ विकारी दृष्टि नहीं रहती, निर्विकारी होकर रहते हैं (कम्पैनियन मिसल)

३८. सतयुग में पर्दा नशीन आदि होता नहीं । वहाँ नग्न कोई होता नहीं । वह है ही निर्विकारी दुनिया ।

३९. वह है ही पुण्य आत्माओं की दुनिया। वहाँ स्त्री कब विधवा नहीं बनती । कोई जीवघात नहीं करता क्योंकि किसी बात की कमी नहीं, कोई दुःख नहीं रहता । जब टाइम पूरा होता है - बूढ़े होते हें तो समझते हैं जाकर बच्चा बनेंगे और ख़ुशी ख़ुशी शरीर छोड़ देते हैं । जन्म लेने समय और शरीर छोड़ने समय भी बाजे बजते हैं । हरेक की अपनी अपनी राजाई, जमींदारी आदि होती है । सतयुग में कंगाल कोई होते नहीं, दान देते नहीं । वहाँ न कोई गरीब, भिखारी होता है जिसको दान करें । भूख होती ही नहीं । ऐसे गरीब नहीं होंगे जो किसको रोटी ही नहीं मिले । यहाँ जैसे गरीब नहीं होते । सुख सब को रहता है । सतयुग में कोई बर्थडे या शरीर छोड़ने पर बरसी अथवा क्रियाकर्म आदि नहीं करेंगे । गौ दान करना, पितरों को खिलाना आदि नहीं होगा क्योंकि दान किया ही जाता है कि दूसरे जन्म में मिले । वहाँ तुम इस समय की प्रालब्ध खाते हो ।

४०. सतयुग में तो गरीब से गरीब का महल भी यहाँ से अच्छा होगा । चाँदी, सोना लगा हुआ होगा, वहाँ सब सस्ताई रहती है, सबको अपने जमीन रहती है । प्रजा के अपने महल, गायें, बैल आदि सब कुछ होते हैं ।

४१. सतयुग है सच्ची विश्रामपुरी । वहाँ विश्राम ही विश्राम है क्योंकि भक्ति की थकान वहाँ होती नहीं, अप्राप्त कोई वस्तु नहीं जिसको प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना पड़े, कोई दुःख नहीं तो परमात्मा को भी पुकारते नहीं । वहाँ किसी भी प्रकार के धक्के नहीं होते । आराम ही आराम है, कोई हंगामा नहीं । वहाँ कोई बात में थकने व तंग होने की बात नहीं । न हार्ड वर्क न बुद्धि का वर्क, जागना सोना समान । यहाँ तो अनेक प्रकार की तंगी देखनी पड़ती है । देवतायें सदा संतुष्ट होते हैं । यहाँ तो कुछ न कुछ आश रहती है । वहाँ चिंता होती ही नहीं ।

स्वर्ग और नरक में कंट्रास्ट (भेद)

नरक (द्वापरयुग - कलियुग)	स्वर्ग (सतयुग - त्रेतायुग)
५५. भारत अभी बहुत कंगाल, कर्जदार और पतित बन पड़ा हैं । यहाँ प्रजा साहूकार है, गवर्मेंट गरीब है । प्रजा से धन मांगते रहते हैं । दुसरे देशों से लोन लेते हैं । ५६. यहाँ कितने मनुष्य दुखी हैं, कितने तो भूखे मरते हैं, कुछ भी सुख नहीं हैं । भल कितना भी धनवान है, तो भी यह अल्पकाल का सुख, काग विष्टा समान है । इनको कहेंगे विषय वैतरणी नदी । ५७. यहाँ तो बैठे बैठे एक्सीडेंट हो जाते हैं । कोई हार्टफेल हो जाते हैं । किसको रोग लग जाता है , मौत अचानक हो जाता है इसलिए श्वास पर भरोसा नहीं रही । नेचुरल कैलेमिटीज भी समय समय पर होती रहती है, अचानक बाढ़ आ जाती है, भूकंप होते रहते हैं । कहाँ पर अकाल तो कहाँ पर बिगर टाइम बरसात पड़ने से भी खेतों में फसलें तबाह हो जाती है जिससे भारी को नुकसान हो जाता है, पुल, मकानें इत्यादि गिर पड़ते हैं किसे **जनमाल** हानि की होती है ५८. आगे चल लश्कर को छोड़ते जायेंगे। बाम्ब्स फेकते जायेंगे । फिर इतने सब मनुष्य नौकरी से छूट जायेंगे तो भूखे मरेंगे । सिपाही भी बहुत तंग करेंगे सोना आदि कुछ भी रखने नहीं देंगे । पैसे ही नहीं रहेंगे जो कुछ खरीद कर सको ।नोट आदि भी चल न सके । अर्थक्वेक होती रहेगी ,बाम्ब्स गिरते रहेंगे एक दो को मारते रहेंगे। खूने नाहेक खेल चलता है ५९. यह पुरानी दुनिया ख़त्म जरुर होनी है । मकान पुराना होता है तो गिर पड़ता है । यह सब दबकर मर जायेंगे, कोई डूब मरेंगे, कोई शॉक में मरेंगे । बाम्ब्स आदि की जहरीली वायु भी मार डालेगी । पिछाड़ी में बहुत दुखी हो मरते हैं । ६०. यह है देह अभिमानी दुनिया, उतरती कला की दुनिया, नास्तिकों की दुनिया, ब्लाइंड फेथ की दुनिया । यह है रोने वाली दुनिया । इस दुनिया को कहा जाता है हिंसक आसुरी दुनिया । सारी दुनिया जैसे वनवाह में है, इसमें रखा ही क्या है कुछ भी नहीं जैसे खोका । यह रावण घोस्ट का पुराना छी छी घाट है । यह है ही घोसटों की दुनिया । अभी है सभी तमोप्रधान मनुष्यों का नाटक अथवा काटों का जंगल क्योंकि यहाँ सब एक दूसरे पर काम कटारी चलाते हैं ।	४२.सतयुग में भारत नम्बरवन अमीर याने गोल्डन एज्ड भारत था जिसका सोने की चिड़िया के रूप में आज भी यादगार है । जिस देश में राजा, प्रजा सभी सुख संपत्ति से भरपूर थे । यहाँ बहुत धर्म हैं तो पहचान देने के लिए अलग अलग नाम रखे हैं । वहाँ तो है ही एक धर्म तो कहने की दरकार नहीं रहती कि हम इस धर्म के हैं । उनको पता भी नहीं रहता कि कोई अन्य धर्म होते हैं , उनकी ही राजाई है । वहाँ लड़ाई झगड़े ही नहीं होते हैं इसलिए सिपाही, लश्कार व युद्ध आदि करने की जरुरत ही नहीं होती । प्रकृति सतोप्रधान होने से प्राकृतिक आपदाएं जैसे भूकंप, अकाल, बाढ़, वायु प्रदुषण आदि नहीं होते ।